**Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)**
© VIJACT |Vol.2, Issue 6, Jun 2026, pp. 71-78 | ISSN: 3139-1656 (Online)
**DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i6.59
Available online at: https://vijact.com/

# Geneva Gay के सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्रीय ढांचे का भारतीय विद्यालयी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक विश्लेषण

**दीपा सिंह [1], विकास कुमार [2] एवं डॉ. जूली सोनकर [3]**
*[1 &2] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय (उ०प्र०)*
*[3] सहायक प्रोफेसर, महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, अमीनाबाद, लखनऊ (उ०प्र०)*

**Article Info**

***Article history:***
Received Jun 18, 2026
Accepted Jun 29, 2026
Published Jun 30, 2026

***Keywords:***
Geneva Gay
भारतीय विद्यालयी शिक्षा
भारतीय ज्ञान प्रणाली
बहुभाषिक शिक्षा
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
NCF-SE, 2023
समावेशी शिक्षा
सामाजिक न्याय
सांस्कृतिक शिक्षण

**ABSTRACT**

*भारत की विद्यालयी शिक्षा बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से विविध शिक्षार्थियों को समाहित किए हुए है, जिसके कारण ऐसी शिक्षण पद्धति की आवश्यकता है जो सांस्कृतिक विविधता को अधिगम का संसाधन मानते हुए समानता, समावेशन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुदृढ़ कर सके। Geneva Gay द्वारा प्रतिपादित सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (Culturally Responsive Teaching) इस दिशा में एक प्रभावशाली सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत करता है। तथापि, यह अवधारणा मुख्यतः पश्चिमी सामाजिक-शैक्षिक संदर्भों में विकसित हुआ है तथा भारतीय विद्यालयी शिक्षा की बहुभाषिकता, भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्थानीय एवं जनजातीय ज्ञान परंपराओं, संवैधानिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में इसका समग्र समालोचनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। इसी शोध-अंतर को संबोधित करते हुए प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य Geneva Gay के शिक्षाशास्त्रीय ढाँचे का भारतीय विद्यालयी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक विश्लेषण करना करना है। यह अध्ययन वैचारिक (Conceptual) एवं समालोचनात्मक साहित्य समीक्षा (Critical Literature Review) पर आधारित है, जिसमें Geneva Gay के प्रमुख सिद्धांतों, उनकी शक्तियों एवं सीमाओं का विश्लेषण करते हुए उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–विद्यालयी शिक्षा 2023, भारतीय ज्ञान प्रणाली, बहुभाषिक शिक्षा तथा भारतीय संविधान के समानता, समावेशन एवं सामाजिक न्याय संबंधी मूल्यों के साथ समन्वित किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि Geneva Gay का ढाँचा सांस्कृतिक विविधता, समावेशी शिक्षण तथा न्यायसंगत कक्षा-व्यवहार के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान करता है, किन्तु भारतीय विद्यालयी शिक्षा की विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक एवं भाषाई आवश्यकताओं के अनुरूप इसके पुनर्संदर्भीकरण (Recontextualization) की आवश्यकता है। अध्ययन का प्रमुख योगदान Geneva Gay के सिद्धांतों को भारतीय ज्ञान प्रणाली, बहुभाषिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों तथा NEP 2020 के साथ एकीकृत करते हुए भारतीय विद्यालयी शिक्षा के लिए सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की एक गहरी समझ प्रदान करती हैं।*

*This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.*

***Corresponding Author:***
**दीपा सिंह**
**Email:** deepasingh10081998@gmail.com

## 1. परिचय:

भारत विश्व के सर्वाधिक बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक एवं बहुधार्मिक देशों में से एक है, जहाँ विद्यालयी शिक्षा विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी, आर्थिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को एक साझा अधिगम मंच प्रदान करती है। प्रत्येक शिक्षार्थी अपने साथ विशिष्ट सांस्कृतिक अनुभव, भाषा, परंपराएँ, मूल्य, विश्वास तथा जीवन-दृष्टि लेकर विद्यालय में प्रवेश करता है। ऐसी विविधतापूर्ण कक्षाओं में प्रभावी शिक्षण केवल विषयवस्तु के संप्रेषण तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान, अनुभवों और सामाजिक संदर्भों से जुड़कर उनकी अधिगम आवश्यकताओं को संबोधित करे। यदि शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की सांस्कृतिक वास्तविकताओं से असंबद्ध रहती है, तो इससे उनकी सहभागिता, प्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि तथा विद्यालय से जुड़ाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इसी संदर्भ में **सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (Culturally Responsive Pedagogy)** एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में उभरकर सामने आया है। यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि विद्यार्थियों की संस्कृति, भाषा, अनुभव तथा सामुदायिक ज्ञान अधिगम के लिए मूल्यवान संसाधन हैं, जिन्हें शिक्षण, पाठ्यचर्या तथा मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में सार्थक रूप से समाहित किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र के प्रमुख विद्वानों में Geneva Gay (2000, 2010) का विशेष स्थान है। उन्होंने **Culturally Responsive Teaching (CRT)** की अवधारणा को व्यवस्थित रूप प्रदान करते हुए यह प्रतिपादित किया कि प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझते हुए शिक्षण सामग्री, शिक्षण-विधियों, अधिगम गतिविधियों तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं को उनके अनुभवों एवं सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप रूपांतरित करें। Gay के अनुसार, सांस्कृतिक विविधता केवल एक सामाजिक तथ्य नहीं, बल्कि शिक्षण की गुणवत्ता, शैक्षिक समानता तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुदृढ़ करने का आधार है।

Geneva Gay के अनुसार—

***"जब शिक्षण विद्यार्थियों की संस्कृति, अनुभवों, भाषाओं, मूल्यों तथा सामुदायिक ज्ञान से जुड़ता है, तब अधिगम अधिक अर्थपूर्ण, प्रभावी एवं सफल बनता है |"***

वर्तमान वैश्विक शैक्षिक विमर्श में समावेशिता, समानता, सामाजिक न्याय तथा बहुसांस्कृतिक शिक्षा को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। UNESCO (2021), OECD (2023) तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी ऐसी शिक्षा व्यवस्था पर बल दिया है जो प्रत्येक शिक्षार्थी की सांस्कृतिक एवं भाषायी पहचान का सम्मान करते हुए समान अधिगम अवसर सुनिश्चित करे। भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** समावेशी, न्यायसंगत एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मातृभाषा एवं बहुभाषिकता, स्थानीय ज्ञान, भारतीय ज्ञान प्रणाली, अनुभवात्मक अधिगम तथा शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण पर विशेष बल देती है। इसी प्रकार **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–विद्यालयी शिक्षा 2023 (NCFSE 2023)** विविधता-संवेदनशील, संदर्भाधारित तथा समावेशी शिक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इसके अतिरिक्त भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21A, 29, 30 तथा 46 समानता, सांस्कृतिक अधिकारों, शिक्षा के अधिकार एवं सामाजिक न्याय के संवैधानिक आधार प्रदान करते हैं, जो सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की अवधारणा के साथ गहन सामंजस्य स्थापित करते हैं।

यद्यपि Geneva Gay का शिक्षण ढाँचा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, तथापि इसका विकास मुख्यतः पश्चिमी सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भों में हुआ है। भारत जैसे बहुभाषिक, बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक देश में इसकी प्रत्यक्ष प्रयोज्यता का समालोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है। भारतीय विद्यालयी शिक्षा की विशेषताएँ—जैसे भाषायी विविधता, स्थानीय एवं जनजातीय ज्ञान परंपराएँ, सामाजिक-सांस्कृतिक विषमताएँ, परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था, संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा शिक्षकों की विविध व्यावसायिक तैयारी—ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं जिनके कारण किसी भी अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक ढाँचे को बिना संदर्भानुकूल रूपांतरण के अपनाना पर्याप्त नहीं माना जा सकता। अतः आवश्यकता इस बात की है कि Geneva Gay के सिद्धांतों का भारतीय शैक्षिक दर्शन, भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्थानीय समुदायों, बहुभाषिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय नीतिगत उद्देश्यों के साथ समन्वय स्थापित किया जाए।

इन्हीं संदर्भों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय विद्यालयी शिक्षा के लिए Geneva Gay के सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण ढाँचे का समालोचनात्मक विश्लेषण करना तथा भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नीतिगत आवश्यकताओं के अनुरूप एक वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन न केवल सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र के सैद्धांतिक विमर्श को भारतीय संदर्भ में विस्तारित करता है, बल्कि शिक्षक शिक्षा, पाठ्यचर्या विकास, कक्षा-शिक्षण, मूल्यांकन एवं शैक्षिक नीति-निर्माण के लिए भी उपयोगी वैचारिक दिशा प्रदान करता है। साथ ही, प्रस्तावित रूपरेखा भविष्य में अनुभवजन्य अनुसंधान एवं विद्यालयी स्तर पर इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन के लिए आधार तैयार करने का प्रयास करती है।

## 2. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (Culturally Responsive Pedagogy: CRT) बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में विकसित एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक दृष्टिकोण है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों की सांस्कृतिक, भाषायी तथा सामाजिक पृष्ठभूमि को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना है। यह दृष्टिकोण इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, अनुभवों एवं सामुदायिक ज्ञान के साथ विद्यालय में प्रवेश करता है, अतः प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब इन विविधताओं को शिक्षण संसाधन के रूप में स्वीकार किया जाए। CRT केवल सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शैक्षिक समानता, समावेशन, सामाजिक न्याय तथा सक्रिय विद्यार्थी सहभागिता को भी प्रोत्साहित करता है (Ladson-Billings, 1995; Gay, 2000).

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र के प्रमुख प्रवर्तकों में **Geneva Gay** का विशेष स्थान है। उन्होंने *Culturally Responsive Teaching* को ऐसी शिक्षण प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है जो विद्यार्थियों के सांस्कृतिक अनुभवों, मूल्यों, संचार शैली तथा अधिगम अभिरुचियों को शिक्षण, पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन से जोड़ती है (Gay, 2000; 2018)। Gay के शिक्षण ढाँचे के प्रमुख आयामों में सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक पाठ्यचर्या, समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ, न्यायसंगत मूल्यांकन, सकारात्मक शिक्षक–विद्यार्थी संबंध तथा सांस्कृतिक रूप से अनुकूल कक्षा वातावरण का निर्माण सम्मिलित है। यह ढाँचा विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को सशक्त बनाते हुए उनकी शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास एवं सहभागिता में वृद्धि करने का प्रयास करता है। यद्यपि यह मॉडल बहुसांस्कृतिक समाजों में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है, फिर भी इसकी अवधारणाओं को विभिन्न राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप पुनर्संदर्भित करना आवश्यक है।

भारतीय विद्यालयी शिक्षा का परिदृश्य अत्यंत विविधतापूर्ण है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ, अनेक धर्म, जनजातीय समुदाय, स्थानीय परंपराएँ तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ एक साथ विद्यमान हैं। भारतीय कक्षाओं में विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान केवल भाषा या धर्म तक सीमित नहीं होती, बल्कि स्थानीय ज्ञान, लोककला, जीवन-पद्धति, सामुदायिक अनुभव तथा क्षेत्रीय परंपराएँ भी उनके अधिगम को प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थिति में एक समान शिक्षण पद्धति सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकती। इसलिए भारतीय संदर्भ में ऐसे शिक्षाशास्त्र की आवश्यकता है जो स्थानीय संस्कृति, मातृभाषा, बहुभाषिकता तथा सामुदायिक सहभागिता को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करते हुए समावेशी एवं न्यायसंगत अधिगम वातावरण का निर्माण करे।

इस दिशा में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** भारतीय शिक्षा को समावेशी, समानतापूर्ण, बहुभाषिक एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने पर विशेष बल देती है। नीति मातृभाषा आधारित शिक्षण, भारतीय ज्ञान प्रणाली, अनुभवात्मक अधिगम, स्थानीय संदर्भों तथा 21वीं सदी के कौशलों के एकीकरण की वकालत करती है। इसी प्रकार **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–विद्यालयी शिक्षा 2023 (NCFSE 2023)** संदर्भानुकूल, लचीले, बहुभाषिक तथा सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षण को विद्यालयी शिक्षा का आधार मानती है। साथ ही भारतीय संविधान के अनुच्छेद **14 (समानता का अधिकार), 15 (भेदभाव का निषेध), 21A (शिक्षा का अधिकार), 29 एवं 30 (सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार)** तथा **46 (वंचित वर्गों के शैक्षिक हितों का संवर्धन)** समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा के संवैधानिक आधार प्रदान करते हैं। इन नीतिगत एवं संवैधानिक प्रावधानों के आलोक में Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे का भारतीय संदर्भ में पुनर्परिप्रेक्ष्यीकरण (recontextualization) न केवल प्रासंगिक है, बल्कि ऐसी वैचारिक रूपरेखा विकसित करने की आवश्यकता भी रेखांकित करता है जो वैश्विक सिद्धांतों को भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक वास्तविकताओं के साथ प्रभावी रूप से समन्वित कर सके।

Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे का समालोचनात्मक विश्लेषण

### 2.1 Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे के प्रमुख सिद्धांत

Geneva Gay (2000, 2018) द्वारा प्रतिपादित **Culturally Responsive Teaching (CRT)** का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों की सांस्कृतिक, भाषायी एवं सामाजिक विविधताओं को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना है। Gay के अनुसार प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अनुभवों एवं जीवन-परिस्थितियों को समझते हुए पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं का निर्माण करें। उनके ढाँचे के प्रमुख सिद्धांतों में (i) विद्यार्थियों की सांस्कृतिक विविधता का सम्मान, (ii) सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक एवं समावेशी पाठ्यचर्या का विकास, (iii) विविध शिक्षण रणनीतियों एवं सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग, (iv) सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील एवं न्यायसंगत मूल्यांकन, (v) सकारात्मक शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों का निर्माण तथा (vi) लोकतांत्रिक एवं समावेशी कक्षा वातावरण की स्थापना शामिल हैं। यह ढाँचा विद्यार्थियों को केवल ज्ञान का उपभोक्ता नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति एवं अनुभवों के आधार पर ज्ञान के सक्रिय सह-निर्माता के रूप में देखता है। इस प्रकार CRT शैक्षिक समानता, सामाजिक न्याय तथा बहुसांस्कृतिक लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का माध्यम बनता है (Gay, 2000; Gay, 2018; Ladson-Billings, 1995)।

### 2.2 सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र का दार्शनिक आधार

Geneva Gay का ढाँचा चार प्रमुख दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित है।

| | |
|---|---|
| **संस्कृति अधिगम को प्रभावित करती है** | संस्कृति केवल व्यक्ति की पहचान नहीं बनाती, बल्कि उसके सोचने के तरीके, संवाद शैली, प्रेरणा, सहभागिता, समस्या समाधान, सीखने की शैली को भी प्रभावित करती है। |
| **समानता (Equity) के लिए शिक्षण में परिवर्तन आवश्यक है** | •समान शिक्षा का अर्थ सभी विद्यार्थियों को एक जैसा पढ़ाना नहीं है। वास्तविक समानता तब संभव है जब शिक्षण विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं, भाषाओं और सांस्कृतिक अनुभवों के अनुरूप हो। |
| **सांस्कृतिक विविधता एक शैक्षिक संसाधन है** | विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उनकी कमजोरी नहीं, बल्कि सीखने की शक्ति है, जिस पर शिक्षण आधारित होना चाहिए। |
| **शैक्षिक उपलब्धि और सांस्कृतिक पहचान साथ-साथ विकसित हो सकती हैं** | •शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को समाप्त करना नहीं, बल्कि उसी के साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि को विकसित करना है। |

*शोधकर्ता द्वारा विकसित Geneva Gay (2018) पर आधारित।*

## 3. सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (CRT) की अवधारणा

Geneva Gay के अनुसार सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण वह शिक्षण है जो विद्यार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान, पूर्व अनुभव, संदर्भ-ढाँचे (Frames of Reference), संवाद शैली, प्रदर्शन शैली को शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न भाग बनाता है, जिससे अधिगम अधिक अर्थपूर्ण, प्रासंगिक एवं प्रभावी बनता है। इस प्रकार CRT विद्यार्थियों को विद्यालयी संस्कृति में ढालने का प्रयास नहीं करता, बल्कि विद्यालयी शिक्षण को विद्यार्थियों की संस्कृति के अनुरूप बनाने का प्रयास करता है।

### 3.1 Geneva Gay के ढाँचे के चार प्रमुख स्तम्भ

Geneva Gay के अनुसार सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण चार प्रमुख आयामों पर आधारित है।

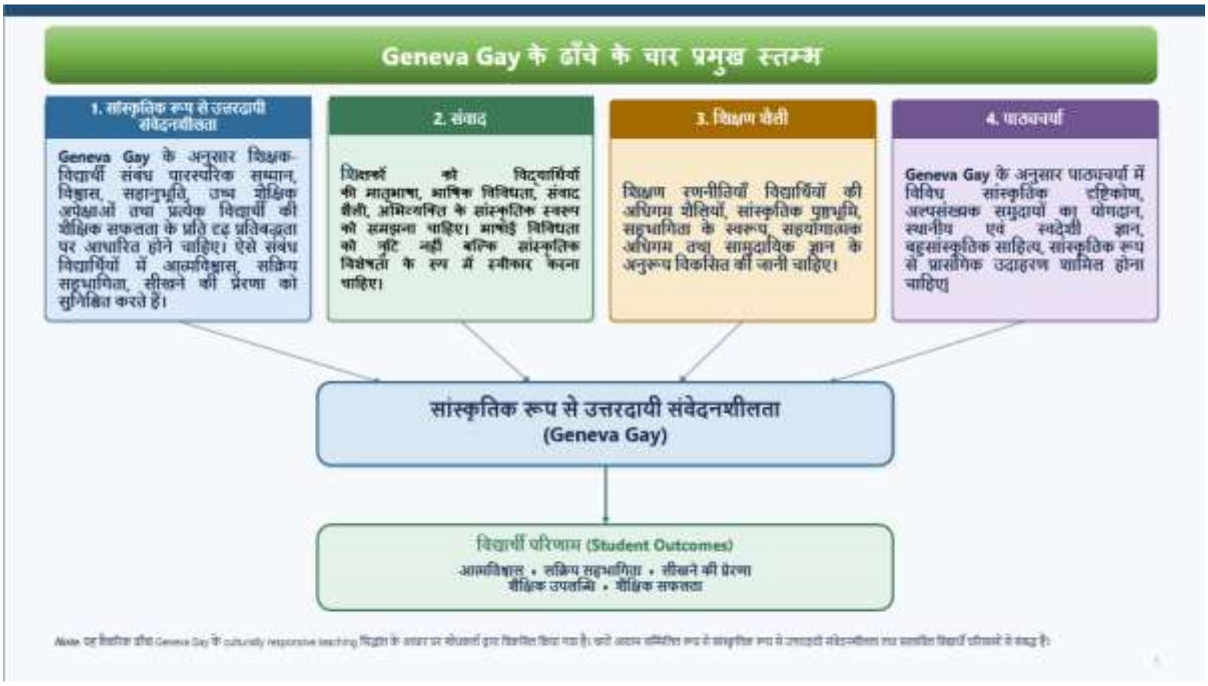


*चित्र 02: यह चित्र शोधकर्ता द्वारा विकसित किया गया है। Geneva Gay (2018)पर आधारित।*

**3.2 सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण की छह प्रमुख विशेषताएँ**

Geneva Gay के अनुसार CRT की छह विशेषताएँ हैं—

| विशेषता | अर्थ |
|---|---|
| Validating (मान्यता प्रदान करने वाला) | विद्यार्थियों की संस्कृति को वैध ज्ञान स्रोत के रूप में स्वीकार करना |
| Comprehensive (समग्र) | संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास पर बल देना |
| Multidimensional (बहुआयामी) | पाठ्यक्रम, शिक्षण, मूल्यांकन, कक्षा वातावरण एवं शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों का समावेश |
| Empowering (सशक्त बनाने वाला) | विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, शैक्षिक दक्षता एवं सांस्कृतिक गौरव का विकास |
| Transformative (रूपांतरणकारी) | असमानताओं को चुनौती देकर शिक्षा में परिवर्तन लाना |
| Emancipatory (मुक्तिकारी) | आलोचनात्मक चिंतन एवं सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता विकसित करना |

*Geneva Gay के culturally responsive teaching (2018) सिद्धांत के आधार पर शोधकर्ता द्वारा विकसित*

**3.3 शिक्षक की भूमिका**

Geneva Gay (2018) के अनुसार सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र में शिक्षक की भूमिका केवल विषयवस्तु के संप्रेषक तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, अनुभवों एवं पहचान को समझने वाला **सांस्कृतिक मध्यस्थ (Cultural Mediator)** होता है। शिक्षक अधिगम को विद्यार्थियों के जीवनानुभवों से जोड़ते हुए एक **सहजकर्ता (Facilitator)** के रूप में कार्य करता है तथा आत्मचिंतन (Reflective Practice) के माध्यम से अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं का निरंतर मूल्यांकन करता है। साथ ही, वह समानता, समावेशन और विविधता को प्रोत्साहित करते हुए **सामाजिक न्याय** का समर्थक तथा ऐसा **समावेशी कक्षा वातावरण** निर्मित करता है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी की सांस्कृतिक पहचान का सम्मान हो और उसे सीखने एवं सफल होने के समान अवसर प्राप्त हों (Gay, 2018; Ladson-Billings, 1995)।

**3.4 संस्कृति और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध**

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र का मूल आधार यह है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालयी संस्कृति और उनके घरेलू एवं सामुदायिक सांस्कृतिक अनुभवों के बीच सामंजस्य पर भी आधारित होती है। Geneva Gay (2018) के अनुसार, जब विद्यालय की भाषा, शिक्षण पद्धतियाँ, संवाद शैली एवं पाठ्यचर्या विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से असंगत होती हैं, तो उनकी सहभागिता, प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इसी प्रकार, Ladson-Billings (1995) ने प्रतिपादित किया कि सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता, सांस्कृतिक दक्षता तथा आलोचनात्मक चेतना का समवर्ती विकास करता है। Moll, Amanti, Neff और González (1992) के *Funds of Knowledge* दृष्टिकोण के अनुसार, परिवार एवं समुदाय में निहित ज्ञान को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करने से अधिगम अधिक अर्थपूर्ण एवं प्रभावी बनता है। इसके अतिरिक्त, Au और Jordan (1981) तथा Villegas (1988) ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षण रणनीतियों को विद्यार्थियों की सांस्कृतिक एवं भाषाई विशेषताओं के अनुरूप बनाने से उनकी सक्रिय सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार होता है। Geneva Gay भी इस बात पर बल देती हैं कि विद्यालय एवं घर की सांस्कृतिक और संप्रेषणात्मक असंगतियों को कम करने से विद्यार्थियों की सहभागिता, प्रेरणा तथा अधिगम परिणामों में सकारात्मक वृद्धि होती है। अतः संस्कृति को अधिगम में बाधा के रूप में नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण **शैक्षिक संसाधन** के रूप में स्वीकार करना समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं NCFSE 2023 के परिप्रेक्ष्य में Geneva Gay के सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की प्रासंगिकता

Geneva Gay द्वारा प्रतिपादित **सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (Culturally Responsive Teaching - CRT)** का मूल सिद्धांत यह है कि शिक्षण को विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, जीवन-अनुभव, समुदाय एवं पहचान के साथ जोड़कर अधिक अर्थपूर्ण, समावेशी एवं प्रभावी बनाया जाए। यद्यपि यह ढाँचा अमेरिकी सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित हुआ, इसके अनेक मूल सिद्धांत भारतीय विद्यालयी शिक्षा के वर्तमान सुधारों, विशेषकर **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** तथा **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा विद्यालयी शिक्षा (NCFSE) 2023** के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से मेल खाते हैं। इन दोनों दस्तावेज़ों में शिक्षा को स्थानीय संदर्भ, बहुभाषिकता, अनुभवात्मक अधिगम, समावेशन तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है।

**1. शिक्षार्थी-केंद्रित एवं संदर्भानुकूल शिक्षण**

Geneva Gay का मानना है कि प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अनुभवों और सामाजिक संदर्भों को समझकर शिक्षण की योजना बनाए। इसी प्रकार **NEP 2020** एवं **NCFSE 2023** शिक्षा को स्थानीय जीवन, भारतीय संस्कृति, परम्पराओं, स्थानीय ज्ञान, कला तथा समुदाय से जोड़ने पर बल देते हैं, ताकि अधिगम विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रासंगिक, रोचक और अर्थपूर्ण बन सके।

**2. बहुभाषिक शिक्षा और भाषाई विविधता**

Geneva Gay के अनुसार भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, पहचान एवं चिंतन का वाहक है। इसलिए शिक्षण में विद्यार्थियों की मातृभाषा एवं भाषाई विविधता का सम्मान आवश्यक है। यही दृष्टिकोण **NEP 2020** में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसमें प्रारम्भिक कक्षाओं में मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षण, बहुभाषिक शिक्षा तथा भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है। **NCFSE 2023** भी बहुभाषिक शिक्षण को अधिगम की गुणवत्ता एवं समावेशन का आधार मानता है।

**3. समावेशी एवं समानतामूलक शिक्षा**

Geneva Gay का शिक्षाशास्त्र उन विद्यार्थियों की आवश्यकताओं पर केन्द्रित है जो सामाजिक, सांस्कृतिक या भाषाई रूप से हाशिए पर हैं। इसका उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी सांस्कृतिक पहचान के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसी प्रकार **NEP 2020** सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों (SEDGs), जनजातीय समुदायों, दिव्यांग विद्यार्थियों तथा अन्य विविध समूहों के लिए समान अवसर एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करती है।

**4. अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित अधिगम**

Geneva Gay के अनुसार विद्यार्थियों का अधिगम तब अधिक प्रभावी होता है जब उसे उनके वास्तविक जीवन, समुदाय और सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़ा जाए। इसी विचार को **NEP 2020** और **NCFSE 2023** अनुभवात्मक (Experiential), गतिविधि-आधारित (Activity-based), परियोजना-आधारित (Project-based) तथा कला-समेकित (Art-integrated) शिक्षण के माध्यम से व्यवहार में लाने का प्रयास करते हैं।

**5. भारतीय संस्कृति एवं स्थानीय ज्ञान का समावेश**

Geneva Gay पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की सांस्कृतिक विरासत, समुदाय तथा स्थानीय ज्ञान को सम्मिलित करने की वकालत करती हैं। इसी प्रकार **NEP 2020** स्पष्ट रूप से अनुशंसा करती है कि पाठ्यचर्या एवं शिक्षण भारतीय संस्कृति, स्थानीय परम्पराओं, इतिहास, दर्शन, कला, लोकज्ञान तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems) से जुड़ा हो, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक एवं सांस्कृतिक रूप से अर्थपूर्ण बन सके।

**6. शिक्षक की भूमिका**

Geneva Gay के अनुसार शिक्षक केवल विषयवस्तु का प्रस्तुतकर्ता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मध्यस्थ (Cultural Mediator), संवेदनशील मार्गदर्शक एवं समावेशी अधिगम वातावरण का निर्माता होता है। इसी प्रकार **NEP 2020** शिक्षक को परिवर्तनकारी भूमिका प्रदान करते हुए निरन्तर व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development), नवाचारी शिक्षण तथा विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाने पर बल देती है।

**7. दक्षता आधारित (Competency-Based) शिक्षा**

यद्यपि Geneva Gay ने प्रत्यक्ष रूप से Competency-Based Education की चर्चा नहीं की है, परन्तु उनका शिक्षाशास्त्र विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, सहयोगात्मक अधिगम तथा वास्तविक जीवन से जुड़े अधिगम अनुभवों पर बल देता है। ये सभी तत्व **NEP 2020** एवं **NCFSE 2023** द्वारा प्रतिपादित दक्षता आधारित शिक्षा की आधारभूत विशेषताएँ हैं।

## 4. Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे की शक्तियाँ

Geneva Gay का शिक्षण ढाँचा बहुसांस्कृतिक एवं समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रभावशाली सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। इसका सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को उनकी शैक्षिक सफलता से जोड़ता है। यह ढाँचा विद्यार्थियों में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास तथा विद्यालय से जुड़ाव की भावना विकसित करता है, जिससे अधिगम में सक्रिय सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षकों को सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर न्यायसंगत एवं समावेशी शिक्षण व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करता है। समूह अधिगम, संवादात्मक शिक्षण, अनुभवात्मक गतिविधियाँ तथा समुदाय-आधारित अधिगम जैसी रणनीतियाँ विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन, सहयोगात्मक अधिगम तथा समस्या-समाधान कौशल को भी प्रोत्साहित करती हैं। यह ढाँचा विविधता को चुनौती के बजाय शैक्षिक संसाधन के रूप में स्वीकार करता है तथा समान अवसर, सामाजिक न्याय एवं समावेशी शिक्षा के वैश्विक उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा की पुनर्कल्पना प्रस्तुत करता है (Gay, 2018; Banks, 2019; UNESCO, 2021)।

## 5. भारतीय संदर्भ में Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे की सीमाएँ

यद्यपि Geneva Gay का शिक्षण ढाँचा बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली है, तथापि इसकी प्रत्यक्ष प्रयोज्यता भारतीय विद्यालयी शिक्षा में कुछ सीमाओं के कारण चुनौतीपूर्ण प्रतीत होती है। प्रथम, यह ढाँचा मुख्यतः पश्चिमी सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भों में विकसित हुआ है; इसलिए भारत की बहुभाषिकता, बहुधार्मिकता, जातीय विविधता तथा स्थानीय सांस्कृतिक जटिलताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता। द्वितीय, इसमें **भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems)**, लोक परंपराओं, जनजातीय ज्ञान तथा स्थानीय सांस्कृतिक विरासत के समावेशन पर स्पष्ट मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है। तृतीय, भारतीय विद्यालयों में परीक्षा-केंद्रित शिक्षा, बड़े कक्षा आकार, संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा शिक्षक प्रशिक्षण की विविध गुणवत्ता जैसी व्यावहारिक चुनौतियाँ CRT के प्रभावी क्रियान्वयन को सीमित कर सकती हैं। चतुर्थ, भारत जैसे बहुभाषिक समाज में मातृभाषा एवं बहुभाषिक शिक्षण की केंद्रीय भूमिका है, जबकि Gay का मॉडल इस आयाम पर अपेक्षाकृत सीमित चर्चा करता है। इसके अतिरिक्त यह ढाँचा भारतीय संविधान में निहित समानता, सामाजिक न्याय एवं सांस्कृतिक अधिकारों तथा **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** एवं **NCFSE 2023** द्वारा प्रतिपादित भारतीय मूल्यों, स्थानीय संदर्भों एवं समुदाय-आधारित अधिगम के साथ प्रत्यक्ष रूप से एकीकृत नहीं है। इसलिए भारतीय विद्यालयी शिक्षा में इसके प्रभावी अनुप्रयोग के लिए एक ऐसी संदर्भानुकूल वैचारिक रूपरेखा की आवश्यकता है, जो Geneva Gay के मूल सिद्धांतों को भारतीय ज्ञान प्रणाली, बहुभाषिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों, स्थानीय समुदायों तथा राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों के साथ समन्वित कर सके। यही आवश्यकता इस शोध-पत्र में प्रस्तावित भारतीय संदर्भानुकूल सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की वैचारिक रूपरेखा का आधार बनती है।

## 6. निष्कर्ष:-

भारतीय विद्यालयी शिक्षा की सांस्कृतिक, भाषायी और सामाजिक विविधता ऐसी शिक्षण व्यवस्था की माँग करती है जो विद्यार्थियों की पहचान और अनुभवों को अधिगम के केंद्र में स्थापित करे। Geneva Gay का सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण ढाँचा इस दिशा में एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को शिक्षण संसाधन के रूप में स्वीकार करता है तथा पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियों, कक्षा संबंधों और मूल्यांकन को उनकी जीवन-परिस्थितियों से जोड़ने पर बल देता है। Gay के ढाँचे का तीसरा संस्करण सांस्कृतिक विविधता को शिक्षक व्यावसायिक अधिगम और प्रभावी शिक्षण से जोड़ने वाला एक प्रमुख स्रोत माना जाता है।

तथापि, पश्चिमी सामाजिक संदर्भ में विकसित इस ढाँचे को भारतीय विद्यालयों में यथावत लागू करना पर्याप्त नहीं होगा। भारत की बहुभाषिकता, क्षेत्रीय विविधता, स्वदेशी एवं जनजातीय ज्ञान परंपराएँ, सामाजिक असमानताएँ, परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था तथा संसाधनों की विषमता इसके संदर्भानुकूल रूपांतरण की आवश्यकता उत्पन्न करती हैं। इसी आवश्यकता के आधार पर प्रस्तुत शोध-पत्र में Geneva Gay के शिक्षण ढाँचे को भारतीय ज्ञान प्रणाली, बहुभाषिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों तथा NEP 2020 के साथ एकीकृत करते हुए भारतीय संदर्भानुकूल सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की वैचारिक रूपरेखा प्रस्तावित की गई है।

प्रस्तावित रूपरेखा में संस्कृति को उत्सवों, परिधानों अथवा प्रतीकात्मक गतिविधियों तक सीमित न रखकर शिक्षण की विषयवस्तु, भाषा, पद्धति, मूल्यांकन और शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों का आधार बनाया गया है। इसका उद्देश्य ऐसी कक्षा का निर्माण करना है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की भाषा और पहचान का सम्मान हो, विविध ज्ञान परंपराओं को मान्यता मिले तथा सभी को सहभागिता एवं शैक्षिक सफलता के समान अवसर प्राप्त हों। यह रूपरेखा NEP 2020 और NCFSE 2023 के समावेशी, बहुभाषिक, अनुभवात्मक और संदर्भ-आधारित शिक्षा संबंधी उद्देश्यों को व्यावहारिक दिशा प्रदान करती है।

अंततः सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र का सफल क्रियान्वयन केवल शिक्षक की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पर निर्भर नहीं किया जा सकता। इसके लिए शिक्षक शिक्षा में सुधार, सांस्कृतिक रूप से समावेशी पाठ्यचर्या, बहुभाषिक संसाधन, लचीला मूल्यांकन, विद्यालयी नेतृत्व, समुदाय सहभागिता और निरंतर नीतिगत समर्थन आवश्यक है। यद्यपि प्रस्तावित रूपरेखा वैचारिक प्रकृति की है, फिर भी यह शिक्षक शिक्षा, विद्यालयी अभ्यास, पाठ्यचर्या विकास और भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए एक व्यवस्थित आधार प्रस्तुत करती है। इसके प्रभावी क्रियान्वयन द्वारा भारतीय विद्यालयों को अधिक न्यायसंगत, समावेशी, बहुभाषिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त अधिगम समुदायों में परिवर्तित किया जा सकता है।

## Reference


[1]. बैंक्स, जे. ए. (2019). बहुसांस्कृतिक शिक्षा का परिचय (6वां संस्करण)। पियर्सन।

[2]. गे, जी. (2000). सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: सिद्धांत, शोध, और अभ्यास। टीचर्स कॉलेज प्रेस।

[3]. गे, जी. (2018). सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: सिद्धांत, शोध, और अभ्यास (3रा संस्करण)। टीचर्स कॉलेज प्रेस।

[4]. भारत सरकार। (2024). भारत का संविधान। विधायी विभाग, कानून और न्याय मंत्रालय।

[5]. लैडसन-बिलिंग्स, जी. (1995). सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत की ओर। अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 32(3), 465–491। https://doi.org/10.3102/00028312032003465

[6]. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

[7]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023). विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

[8]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2024). विद्यालयों के लिए सलाह: विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 का कार्यान्वयन।

[9]. पेरिस, डी. (2012). सांस्कृतिक रूप से संपोषित शिक्षणशास्त्र: दृष्टिकोण, शब्दावली, और अभ्यास में आवश्यक परिवर्तन। एजुकेशनल रिसर्चर, 41(3), 93–97।

[10]. यूनेस्को। (2021). हमारे भविष्य को पुनः कल्पना करना: शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबंध। यूनेस्को।

[11]. मॉल, एल. सी., अमंती, सी., नेफ, डी., और गोन्ज़ालेज़, एन. (1992). शिक्षण के लिए ज्ञान के स्रोत: घर और कक्षाओं को जोड़ने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग। थ्योरी इनटू प्रैक्टिस, 31(2), 132–141। https://doi.org/10.1080/00405849209543534

[12]. विलेगास, ए. एम. (1988). विद्यालय विफलता और सांस्कृतिक असंगति: एक अन्य दृष्टिकोण। द अर्बन रिव्यू, 20(4), 253–265।

[13]. वोग्ट, एल. ए., जॉर्डन, सी., और थार्प, आर. जी. (1987). विद्यालय विफलता की व्याख्या, विद्यालय सफलता का उत्पादन: दो मामले। एन्थ्रोपोलॉजी एंड एजुकेशन क्वार्टरली, 18(4), 276–286।

[14]. आउ, के. एच., और जॉर्डन, सी. (1981). हवाईयन बच्चों को पढ़ना सिखाना: सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त समाधान खोजना। एच. टी. त्रुएबा, जी. पी. गुथरी, और के. एच. आउ (सं.), संस्कृति और द्विभाषी कक्षा: कक्षा नृविज्ञान में अध्ययन (पृ. 139–152)। न्यूबरी हाउस।

## *Cite this Article:*

**दीपा सिंह, विकास कुमार एवं डॉ. जूली सोनकर, "Geneva Gay के सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्रीय ढांचे का भारतीय विद्यालयी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक विश्लेषण"**, *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 6, pp. 71-78, Jun 2026.*

*Journal URL: https://vijact.com*

*DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.59*